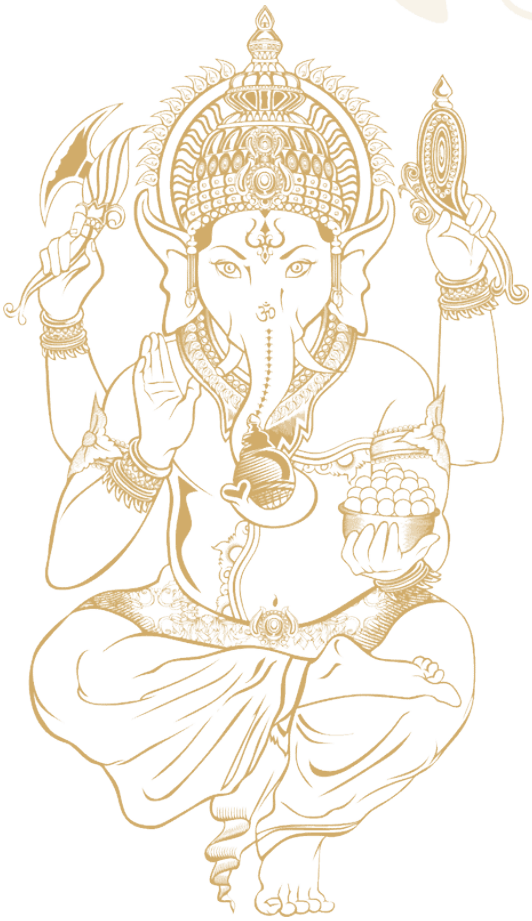

Sneha Soni

11 Jun 2018

12:20 PM

Meerut

Model: Web-MyKundli

Order No: 120354801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**11/06/2018**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**12:20:00 घंटे**
इष्ट	17:29:51 घटी
स्थान	**Meerut**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	29:00:00 उत्तर
रेखांश	77:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:00:48 घंटे
वेलान्तर	00:00:23 घंटे
साम्पातिक काल	05:19:04 घंटे
सूर्योदय	05:20:03 घंटे
सूर्यास्त	19:17:39 घंटे
दिनमान	13:57:36 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	ग्रीष्म
सूर्य के अंश	26:12:19 वृष
लग्न के अंश	26:54:05 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**भरणी - 3**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	अतिगण्ड
करण	गर
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ले-लेखा
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1940	ज्येष्ठ	21
पंजाबी	संवत : 2075	ज्येष्ठ	29
बंगाली	सन् : 1425	ज्येष्ठ	27
तमिल	संवत : 2075	वैकासी	28
केरल	कोल्लम : 1193	इदवम	28
नेपाली	संवत : 2075	ज्येष्ठ	28
चैत्रादि	संवत : 2075	ज्येष्ठ	कृष्ण 12
कार्तिकादि	संवत : 2075	ज्येष्ठ	कृष्ण 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 10:03:57
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 21:05:33 घंटे
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय कालीन योग ____: अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____: 16:01:48 घंटे
जन्म योग _____: अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण ____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 10:03:57 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 34:37:05
भभोग _____: 56:30:58
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 7 वर्ष 9 मा 24 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

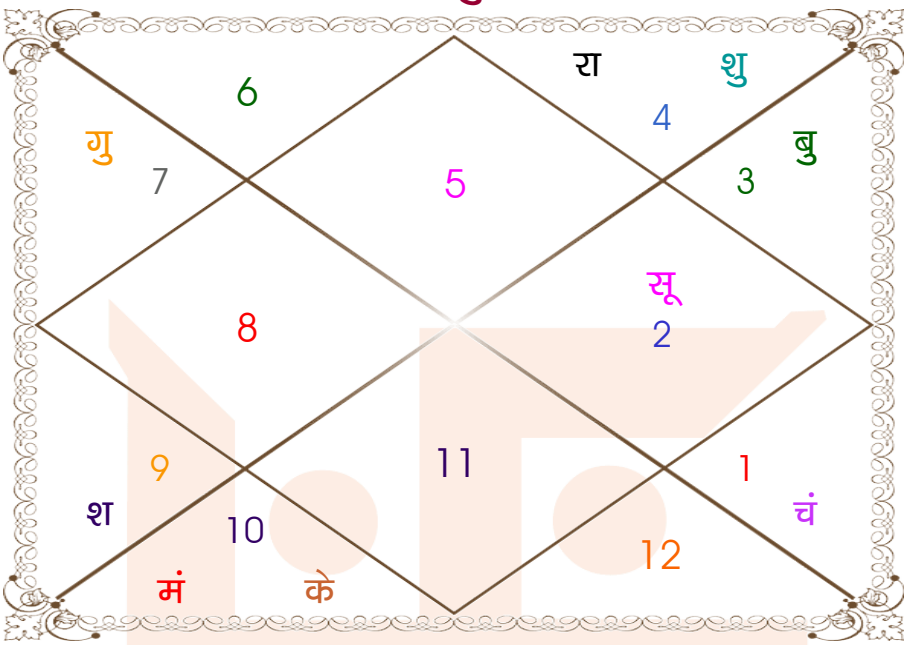

चन्द्र कुंडली

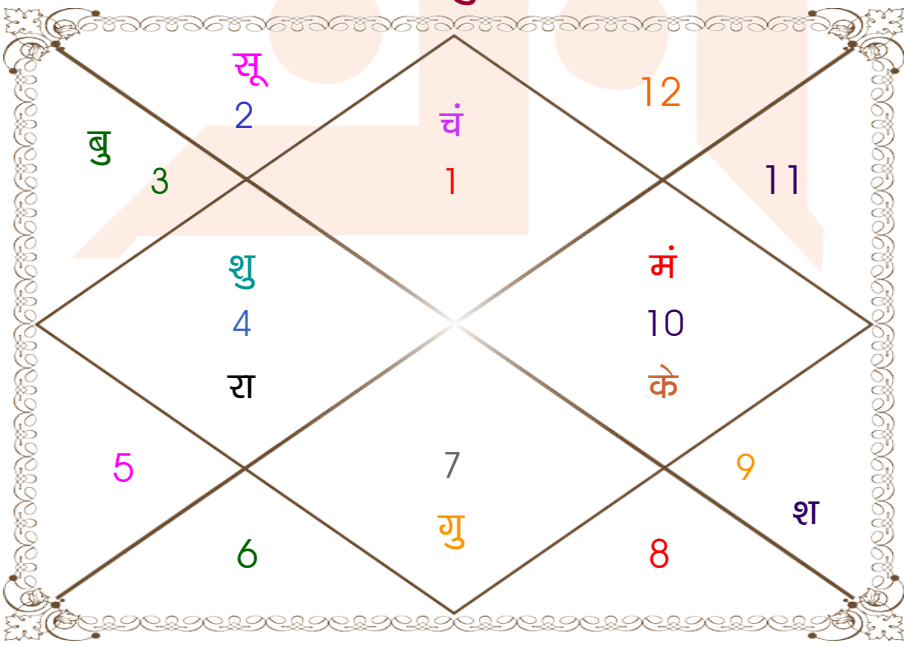

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

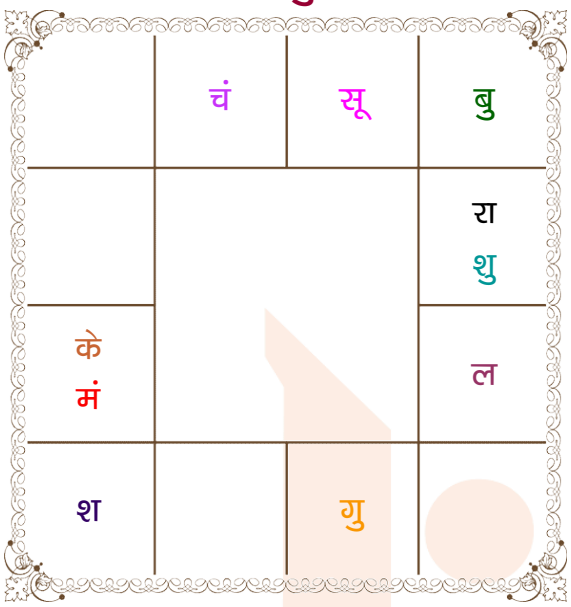

लग्न कुंडली

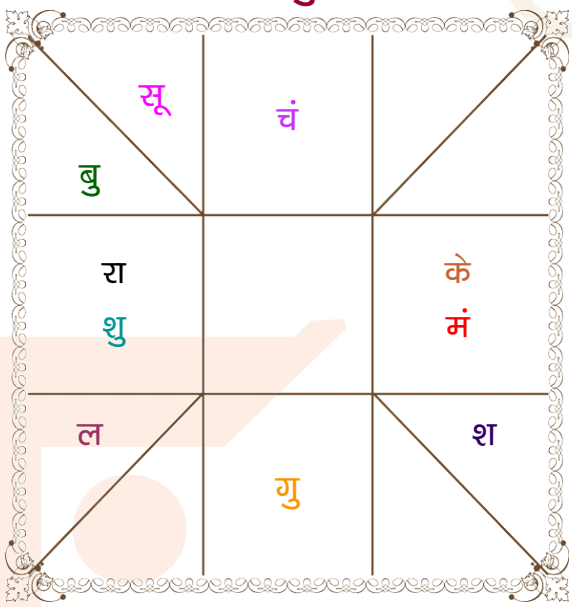

विंशोत्तरी
शुक्र 7वर्ष 9मा 24दि

शुक्र

11/06/2018

07/04/2126

शुक्र	06/04/2026
सूर्य	05/04/2032
चन्द्र	06/04/2042
मंगल	05/04/2049
राहु	06/04/2067
गुरु	06/04/2083
शनि	07/04/2102
बुध	07/04/2119
केतु	07/04/2126

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 11मा 13दि

उल्का

25/05/2020

25/05/2026

उल्का	25/05/2021
सिद्धा	25/07/2022
संकटा	24/11/2023
मंगला	24/01/2024
पिंगला	25/05/2024
धान्या	24/11/2024
भ्रामरी	25/07/2025
भद्रिका	25/05/2026

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	26:54:05	316:37:00	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	---
सूर्य			वृष	26:12:19	00:57:23	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	21:27:17	14:12:13	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	सम राशि
मंगल			मक	13:39:00	00:10:57	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	उच्च राशि
बुध		अ	मिथु	02:35:28	02:08:52	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	केतु	स्वराशि
गुरु	व		तुला	20:30:22	00:05:01	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	02:48:59	01:10:16	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	शत्रु राशि
शनि	व		धनु	12:55:00	00:04:08	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	सम राशि
राहु	व		कर्क	12:46:57	00:06:45	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	मंगल	शत्रु राशि
केतु	व		मक	12:46:57	00:06:45	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	07:10:22	00:02:31	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	राहु	---
नेप			कुंभ	22:21:56	00:00:15	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	---
प्लूटो	व		धनु	26:37:40	00:01:13	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	---
दशम भाव			वृष	26:29:01	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:06:38

लग्न-चलित

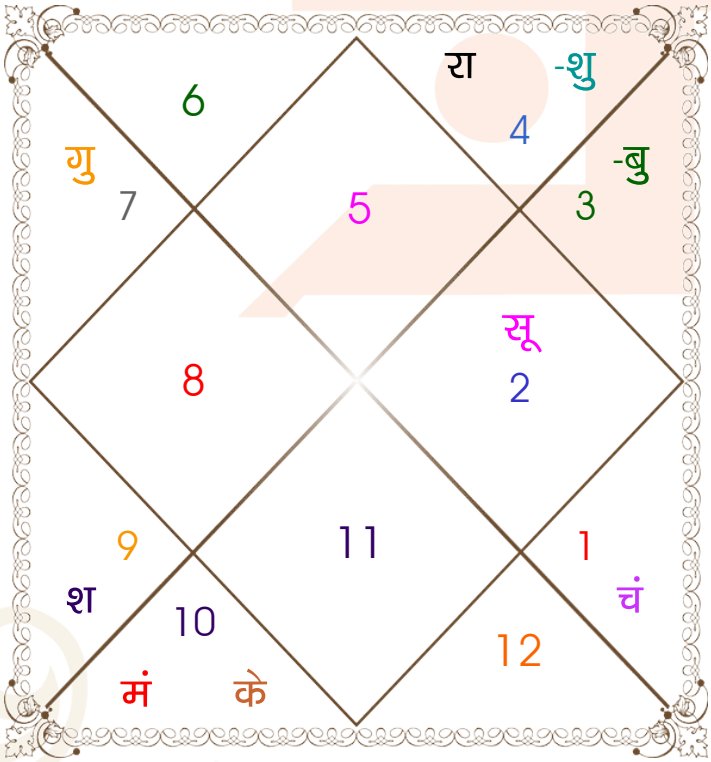

चन्द्र कुंडली

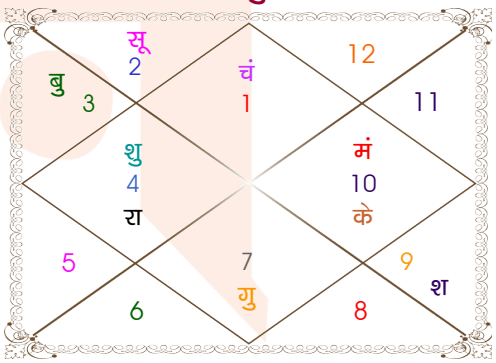

नवमांश कुंडली

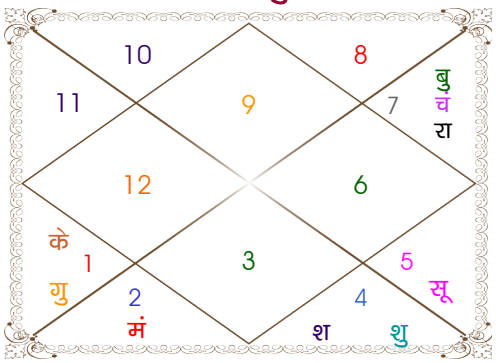

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajiJyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	11:49:55	सिंह	26:54:05
2	कन्या	11:49:55	कन्या	26:45:44
3	तुला	11:41:33	तुला	26:37:22
4	वृश्चिक	11:33:11	वृश्चिक	26:29:01
5	धनु	11:33:11	धनु	26:37:22
6	मकर	11:41:33	मकर	26:45:44
7	कुम्भ	11:49:55	कुम्भ	26:54:05
8	मीन	11:49:55	मीन	26:45:44
9	मेष	11:41:33	मेष	26:37:22
10	वृष	11:33:11	वृष	26:29:01
11	मिथुन	11:33:11	मिथुन	26:37:22
12	कर्क	11:41:33	कर्क	26:45:44

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	26:54:05
2	कन्या	24:23:32
3	तुला	24:46:06
4	वृश्चिक	26:29:01
5	धनु	28:06:08
6	मकर	28:34:55
7	कुम्भ	26:54:05
8	मीन	24:23:32
9	मेष	24:46:06
10	वृष	26:29:01
11	मिथुन	28:06:08
12	कर्क	28:34:55

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

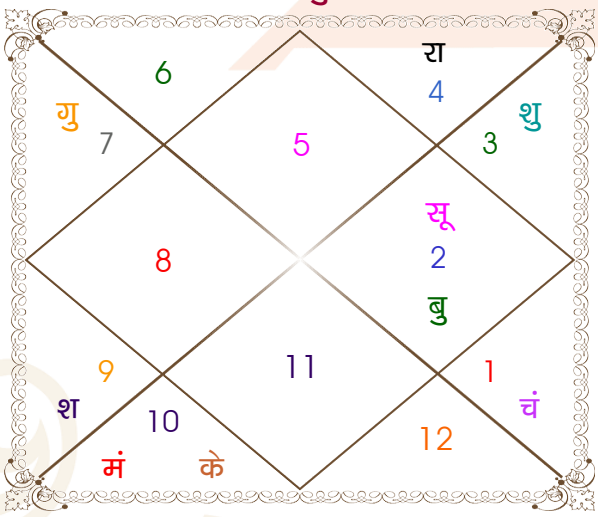

भाव कुंडली

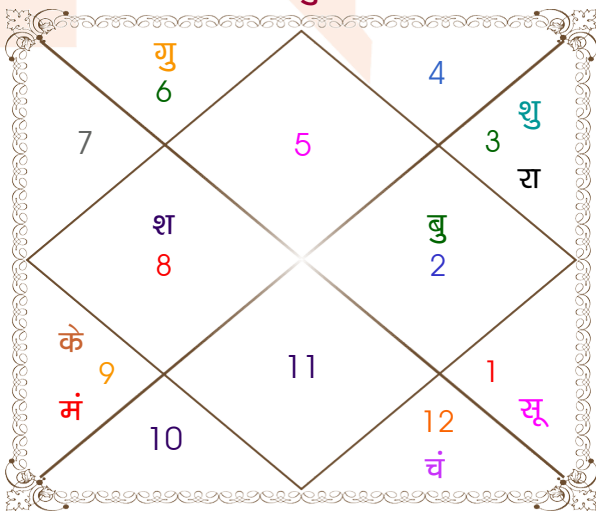

Shri Dadaji Jyotish kendra
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi
8871726789
dadajiJyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 7 वर्ष 9 मास 24 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
11/06/2018		06/04/2026		05/04/2032		06/04/2042		05/04/2049	
06/04/2026		05/04/2032		06/04/2042		05/04/2049		06/04/2067	
	00/00/0000	सूर्य	24/07/2026	चंद्र	03/02/2033	मंगल	02/09/2042	राहु	17/12/2051
	00/00/0000	चंद्र	23/01/2027	मंगल	04/09/2033	राहु	20/09/2043	गुरु	12/05/2054
	00/00/0000	मंगल	31/05/2027	राहु	06/03/2035	गुरु	26/08/2044	शनि	18/03/2057
	00/00/0000	राहु	23/04/2028	गुरु	05/07/2036	शनि	05/10/2045	बुध	05/10/2059
	11/06/2018	गुरु	09/02/2029	शनि	04/02/2038	बुध	02/10/2046	केतु	23/10/2060
गुरु	04/02/2019	शनि	22/01/2030	बुध	06/07/2039	केतु	28/02/2047	शुक्र	24/10/2063
शनि	06/04/2022	बुध	29/11/2030	केतु	04/02/2040	शुक्र	29/04/2048	सूर्य	16/09/2064
बुध	03/02/2025	केतु	06/04/2031	शुक्र	05/10/2041	सूर्य	04/09/2048	चंद्र	18/03/2066
केतु	06/04/2026	शुक्र	05/04/2032	सूर्य	06/04/2042	चंद्र	05/04/2049	मंगल	06/04/2067

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
06/04/2067		06/04/2083		07/04/2102		07/04/2119		07/04/2126	
06/04/2083		07/04/2102		07/04/2119		07/04/2126		00/00/0000	
गुरु	24/05/2069	शनि	09/04/2086	बुध	02/09/2104	केतु	03/09/2119	शुक्र	06/08/2129
शनि	05/12/2071	बुध	17/12/2088	केतु	30/08/2105	शुक्र	02/11/2120	सूर्य	06/08/2130
बुध	12/03/2074	केतु	26/01/2090	शुक्र	30/06/2108	सूर्य	10/03/2121	चंद्र	06/04/2132
केतु	16/02/2075	शुक्र	27/03/2093	सूर्य	07/05/2109	चंद्र	09/10/2121	मंगल	06/06/2133
शुक्र	17/10/2077	सूर्य	09/03/2094	चंद्र	06/10/2110	मंगल	07/03/2122	राहु	06/06/2136
सूर्य	05/08/2078	चंद्र	08/10/2095	मंगल	03/10/2111	राहु	26/03/2123	गुरु	12/06/2138
चंद्र	05/12/2079	मंगल	16/11/2096	राहु	22/04/2114	गुरु	29/02/2124		00/00/0000
मंगल	10/11/2080	राहु	23/09/2099	गुरु	28/07/2116	शनि	09/04/2125		00/00/0000
राहु	06/04/2083	गुरु	07/04/2102	शनि	07/04/2119	बुध	07/04/2126		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 7 वर्ष 8 मा 30 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
03/02/2025		06/04/2026		24/07/2026		23/01/2027		31/05/2027	
06/04/2026		24/07/2026		23/01/2027		31/05/2027		23/04/2028	
केतु	28/02/2025	सूर्य	11/04/2026	चंद्र	08/08/2026	मंगल	30/01/2027	राहु	19/07/2027
शुक्र	10/05/2025	चंद्र	20/04/2026	मंगल	19/08/2026	राहु	18/02/2027	गुरु	01/09/2027
सूर्य	01/06/2025	मंगल	27/04/2026	राहु	15/09/2026	गुरु	07/03/2027	शनि	23/10/2027
चंद्र	06/07/2025	राहु	13/05/2026	गुरु	10/10/2026	शनि	28/03/2027	बुध	08/12/2027
मंगल	31/07/2025	गुरु	28/05/2026	शनि	08/11/2026	बुध	15/04/2027	केतु	27/12/2027
राहु	03/10/2025	शनि	14/06/2026	बुध	03/12/2026	केतु	22/04/2027	शुक्र	20/02/2028
गुरु	29/11/2025	बुध	29/06/2026	केतु	14/12/2026	शुक्र	14/05/2027	सूर्य	08/03/2028
शनि	04/02/2026	केतु	06/07/2026	शुक्र	14/01/2027	सूर्य	20/05/2027	चंद्र	04/04/2028
बुध	06/04/2026	शुक्र	24/07/2026	सूर्य	23/01/2027	चंद्र	31/05/2027	मंगल	23/04/2028

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
23/04/2028		09/02/2029		22/01/2030		29/11/2030		06/04/2031	
09/02/2029		22/01/2030		29/11/2030		06/04/2031		05/04/2032	
गुरु	01/06/2028	शनि	05/04/2029	बुध	07/03/2030	केतु	06/12/2030	शुक्र	06/06/2031
शनि	18/07/2028	बुध	25/05/2029	केतु	26/03/2030	शुक्र	28/12/2030	सूर्य	24/06/2031
बुध	28/08/2028	केतु	14/06/2029	शुक्र	16/05/2030	सूर्य	03/01/2031	चंद्र	24/07/2031
केतु	14/09/2028	शुक्र	11/08/2029	सूर्य	01/06/2030	चंद्र	14/01/2031	मंगल	15/08/2031
शुक्र	02/11/2028	सूर्य	28/08/2029	चंद्र	27/06/2030	मंगल	21/01/2031	राहु	08/10/2031
सूर्य	16/11/2028	चंद्र	26/09/2029	मंगल	15/07/2030	राहु	09/02/2031	गुरु	26/11/2031
चंद्र	11/12/2028	मंगल	16/10/2029	राहु	30/08/2030	गुरु	26/02/2031	शनि	23/01/2032
मंगल	28/12/2028	राहु	07/12/2029	गुरु	11/10/2030	शनि	19/03/2031	बुध	15/03/2032
राहु	09/02/2029	गुरु	22/01/2030	शनि	29/11/2030	बुध	06/04/2031	केतु	05/04/2032

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
05/04/2032		03/02/2033		04/09/2033		06/03/2035		05/07/2036	
03/02/2033		04/09/2033		06/03/2035		05/07/2036		04/02/2038	
चंद्र	30/04/2032	मंगल	16/02/2033	राहु	26/11/2033	गुरु	10/05/2035	शनि	05/10/2036
मंगल	18/05/2032	राहु	20/03/2033	गुरु	07/02/2034	शनि	26/07/2035	बुध	26/12/2036
राहु	03/07/2032	गुरु	17/04/2033	शनि	04/05/2034	बुध	03/10/2035	केतु	29/01/2037
गुरु	12/08/2032	शनि	21/05/2033	बुध	21/07/2034	केतु	01/11/2035	शुक्र	05/05/2037
शनि	30/09/2032	बुध	20/06/2033	केतु	22/08/2034	शुक्र	21/01/2036	सूर्य	03/06/2037
बुध	12/11/2032	केतु	03/07/2033	शुक्र	21/11/2034	सूर्य	14/02/2036	चंद्र	21/07/2037
केतु	29/11/2032	शुक्र	07/08/2033	सूर्य	19/12/2034	चंद्र	26/03/2036	मंगल	24/08/2037
शुक्र	19/01/2033	सूर्य	18/08/2033	चंद्र	02/02/2035	मंगल	23/04/2036	राहु	19/11/2037
सूर्य	03/02/2033	चंद्र	04/09/2033	मंगल	06/03/2035	राहु	05/07/2036	गुरु	04/02/2038

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 7, 8, 1
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	95%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	77%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, सुख
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, धन
पुखराज	गुरु	56%	पराक्रम, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	53%	भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	53%	कम खर्च, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	53%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	50%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
नीलम	शनि	25%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

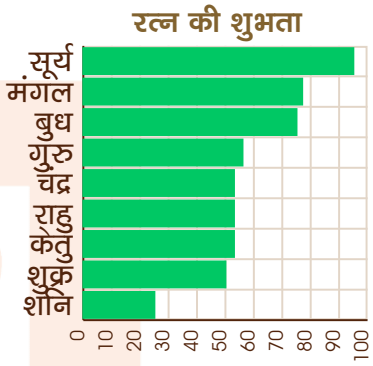

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	06/04/2026	83%	31%	77%	81%	56%	62%	38%	59%	59%
सूर्य	05/04/2032	100%	59%	83%	75%	62%	25%	0%	31%	31%
चंद्र	06/04/2042	100%	66%	77%	81%	56%	50%	25%	31%	31%
मंगल	05/04/2049	100%	59%	89%	62%	62%	50%	25%	31%	59%
राहु	06/04/2067	83%	31%	64%	75%	56%	56%	38%	66%	31%
गुरु	06/04/2083	100%	59%	83%	62%	69%	25%	25%	53%	53%
शनि	07/04/2102	83%	31%	64%	81%	56%	56%	50%	59%	31%
बुध	07/04/2119	100%	31%	77%	87%	56%	56%	25%	53%	53%
केतु	07/04/2126	83%	31%	83%	75%	56%	56%	0%	31%	66%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। यह भाव शत्रु रोग तथा ऋण आदि का प्रतिनिधित्व करने वाला भाव है। अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा शत्रु या प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा एवं सामान्यतया आप स्वस्थता की ही अनुभूति करेंगी। आप पराक्रमी एवं कठोर कार्यों को सम्पन्न करने में रुचिशील रहेंगी। अतः आप (या कार्यरत न होने पर आपके पति) पुलिस सेना या अन्य पराक्रमी विभागों में कार्यरत हो सकती हैं। जीवन में ऋण आदि लेने की आपको कम ही आवश्यकता पड़ेगी तथा यदि लेंगी भी तो वापस करने में विशेष कठिनाई नहीं होगी जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगी। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यकलापों में आपकी अल्प मात्रा में ही रुचि रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कार्य करने पर अधिक विश्वास करेंगी। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्यबल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कर्म करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा तथा जीवन में शुभाशुभ दोनों प्रकार के व्ययों को करने में तत्पर रहेगी। यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा लेकिन इनको दूर करने में आप समर्थ रहेंगी साथ ही दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ होंगी। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने समस्त कार्यों को उत्साह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगी ।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगी तथा परिवार का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करने में समर्थ रहेंगी। जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा उनसे आप पूर्ण सुख एवं सहयोग को प्राप्त करेंगी। अतः प्रसन्नता पूर्वक आप अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(11/06/2018 - 06/04/2026)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 11/06/2018 को आरम्भ और 06/04/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होगें। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

महादशा :- सूर्य
(06/04/2026 - 05/04/2032)

सूर्य की महादशा 06/04/2026 को आरंभ और 05/04/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य दशम भाव में अवस्थित है। सूर्य शक्ति, प्रभुत्व, या, ख्याति, और राजकीय अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दशम भाव व्यवसाय, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, प्राप्ति और कार्य के स्वभाव का सूचक है। अतः इस दशा में आपको व्यवसाय में लाभ तथा प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा जीवन की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्भुत शक्ति है और आप किसी भी बीमारी से जल्द ही छुटकारा प्राप्त कर लेंगे।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी। आप स्वभाव से उदार व दानी हैं, इसलिये यदि आप पर्याप्त धन चाहते हैं तो अपने व्यय पर नियंत्राण रखें। आप अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप पिता के कारोबार में शामिल हो सकते हैं और नौकरी तथा वाणिज्य-व्यापार से धन अर्जित कर सकते हैं। आपको सरकारी व्यवसाय से लाभ प्राप्त हो सकता है और कठिन परिश्रम से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस दशा में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों या अन्य सरकारी एजेंसियों के प्रधान होंगे। आपको शक्तिशाली व आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। इस दशा-काल में आपको नियत आमदनी के साथ-साथ एक सुरक्षित कार्य मिलेगा। आप सैन्य, राजनीतिक, प्रशसकीय, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाओं में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। रत्न, पत्थर, संगमरमर, सोना, कोयला, अनाज आदि का व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोग इस दशा के दौरान बहुत अच्छा करेंगे और उनकी पदोन्नति होगी। उच्चाधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति और आमदनी में वृद्धि होगी। व्यवसायियों -व्यापारियों को यश और ख्याति तथा विरोधियों पर विजय की प्राप्ति होगी।

परिवार :

आप इस दशा में अपने बच्चों को प्यार देंगे और उनका ध्यान रखेंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे। आप अपने परिवार तथा जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रखेंगे। आपके मित्रों की संख्या बड़ी होगी और आपका सामाजिक जीवन उत्तम होगा। अपना विचार दूसरों पर न थोंपे। आपके जीवन साथी की आमदनी अच्छी होगी और उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी माता को सुख प्राप्त होगा और साझेदारी में लाभ प्राप्त होंगे। आपके पिता भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों की अवांछित यात्राएँ और व्यय होंगे। उन्हें सुख-सुविधाएँ और लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

आप धार्मिक प्रवचन देंगे, या योग में आपकी रुचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(06/04/2026 - 24/07/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/04/2026 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 24/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में सूर्य की शुभ स्थिति के कारण आप मान-सम्मान और उच्चपद को प्राप्त करेंगे। सरकार से लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। उच्चकोटि का व्यावसायिक जीवन रहेगा और सफलता कदम चूमेगी। राजनीति से संबद्ध जातकों को चुनाव में सफलता मिलेगी और जनमानस का स्नेह प्राप्त होगा। यह अवधि जायदाद क्रय करने के लिए शुभ है। विरासत में भी जायदाद मिल सकती है।

शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-सुविधाओं की वृद्धि होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता-पिता से भी धन मिलेगा। पिता का व्यवसाय प्रगति करेगा। माता की लोकप्रियता बढ़ेगी। भाई-बहनों के लिए समय प्रतिकूल हो सकता है। संतान के लिए समय भाग्यशाली रहेगा।

सभी मुकदमे और लंबित मामले आपके पक्ष में रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सिरदर्द, फुंसी आदि मामूली तकलीफें हो सकती हैं। घुटनों से संबंधित समस्या भी हो सकती है। इन सब से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप हितकर रहेगा।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(24/07/2026 - 23/01/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 06/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 23/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका भाग्य चमकेगा। आप धनी और सुखी रहेंगे। पुश्तैनी जायदाद से लाभ होगा। माता-पिता से प्रसन्नता प्राप्त होगी। विद्या, लेखन, प्रकाशन और शोध से प्रसिद्धि मिल सकती है। लंबी यात्राओं से लाभ प्राप्त हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में आपकी रुचि रहेगी।

भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। वरिष्ठ व्यक्तियों से लाभप्रद संबंध बन सकते हैं। संतान भाग्यशाली रहेगी। संतान का जन्म भी संभव है। आपके पिता के अधिकार और शक्ति बढ़ेंगे। बड़े भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। विद्यार्थीगणों के ज्ञान का दायरा बढ़ेगा।

इस अंतर्दशा में सफलता, आय, प्रभाव, शुभ उत्सव, मान, सम्मान, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य आदि में प्रगति होगी। शुभत्ववर्धन हेतु श्वेत वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(23/01/2027 - 31/05/2027)

आपकी सूर्य की महादशा 06/04/2026 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 31/05/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय और ऊर्जावान रहेंगे तथा मानसिक या शारीरिक बाधाओं को दृढ़ता से पार करेंगे। आपको प्रसिद्धि और सफलता की प्राप्ति होगी। प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के लिए यह उत्तम समय है। विरोधी या प्रतिद्वंद्वी आपको हानि नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपकी संतान बहुत सक्रिय और ऊर्जावान होगी। वे खेलकूद में भाग लेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार का अप्रत्याशित खर्चा हो सकता है। माता में उत्साह और ऊर्जा रहेंगे। पिता को सत्ता और अधिकार प्राप्त होंगे। आपका खर्चा बढ़ सकता है। वाहन खरीद/बेच सकते हैं। बड़े भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन हो सकता है। मामा पक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे।

सेवारत जातकों के लिए समय भाग्यशाली है। व्यापारियों को ऋण प्राप्त हो सकता है या ओवरड्राफ्ट सुविधा मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। फोड़े-फुंसी, ज्वर आदि हो सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(31/05/2027 - 23/04/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 31/05/2027 को प्रारंभ होकर 23/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में भाग्य मध्यम रहेगा। धर्म और अध्यात्म में समय व्यतीत करेंगे। कार्यों में विरोध हो सकता है, अतः विवाद से बचें। शत्रुओं का नाश होगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। समाज सेवा से लाभ होगा।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है, मगर उनकी प्रतिरोधक शक्ति उत्तम रहेगी। आपके पिता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी और उनकी व्यस्तता बढ़ेगी। माता की धर्म में रुचि बढ़ेगी। भाई-बहनों को कार्य में लाभ होगा और ख्याति मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को वर्तमान स्तर बनाये रखने के लिए अधिक परिश्रम करना होगा। व्यापारियों को अप्रत्याशित

लाभ हो सकता है। काफी दिनों से चल रही बीमारी से सावधान रहें, विशेषतः नेत्रों और अस्थियों का ध्यान रखें; ज्वर आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें और नीले पदार्थों का दान करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(23/04/2028 - 09/02/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/04/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 23/04/2028 को प्रारंभ होकर 09/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों, संबंधियों और पड़ौसियों से सम्मान प्राप्त होगा। वाक्शक्ति द्वारा लाभ हो सकता है। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं हो सकती हैं। आप व्याख्यान दे सकते हैं। अध्यात्म में रुचि रहेगी। अनुबंधों और भागीदारी के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। आकांक्षाओं की पूर्ति, सम्मान, उच्चाधिकारियों की प्रशंसा और धन में वृद्धि की संभावना है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार का समय भाग्यशाली रहेगा। आपके पिता को भागीदारी से लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के शुभ कार्यों में खर्चे बढ़ सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान को मान-सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल पर सुविधाएं उत्तम होंगी। परामर्शदाताओं के स्पर्धी निर्बल रहेंगे। व्यापारी चहुंमुखी आय प्राप्त करेंगे।

कान, शरीर के ऊपरी भाग और स्नायुतंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(09/02/2029 - 22/01/2030)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 09/02/2029 को प्रारंभ होगी और 22/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में संतान से सुख और खुशी की प्राप्ति होगी। वांछित तथ्यों के सकारात्मक होने पर शिशु का जन्म हो सकता है। परंपरागत कामों में निवेश से लाभ होगा। धन, भूमि और वाहन की प्राप्ति होगी। सब बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। घर में कोई उत्सव या विवाह हो सकता है। सरकारी अनुबंधों से लाभ

हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा, लोकप्रियता बढ़ेगी। आपके पिता की रुचि धर्म में बढ़ सकती है। माता के धन और घरेलू सुख में वृद्धि होगी। भाई-बहनों को अधिक परिश्रम करना होगा; विवाह हो सकता है। आपकी संतान की तकनीकी विषयों में रुचि होगी। उनका मन भटक सकता है, मगर वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे, सहचर्य से लाभ उठाएंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अवांछित परिवर्तन, तबादले हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को कार्यस्थल पर तालमेल करना पड़ेगा। व्यापारियों के लिए निवेश लाभकारी होंगे।

स्नायुतंत्र और पाचन की समस्याओं से सावधान रहें। कष्ट से बचने के लिए काली वस्तुएं दान देकर शनि की आराधना करें।